Thesis Title: From Spectral to Hypervisible: The Cultural Production of Muslim Women in the Indian Public Sphere, 1992-2024

Name of the Student: Shyista Aamir Khan

Entry No.: 2018HUZ8113

Abstract of thesis

The thesis explores Muslim women's participation in the public sphere from the 1990s to the present. It examines their transition from non-vocal participants to articulating their aspirations and asserting agency. The work shows how Muslim women claim their right to speak in the public sphere and reclaim their agentic sovereignty. Their assertions are accompanied by new forms of expression and articulations that contribute to a new language of resistance in the public sphere. This newly acquired confidence by Muslim women in the public sphere poses a challenge to the stereotyped understanding of marginality. It indicates that their concerns and aspirations are very different from the historically perceived concerns of Muslim women in the dominant public sphere. The challenges encountered in the process of speaking indicate their marginalized status. The regulatory mechanisms controlling the speech/act of Muslim women comprise discursive violence, denial of choices, conditional access to social and political mobility, and promotion of exclusionary politics. Biases, prejudices, and stereotypes are created and reproduced, culturally and socially, to undermine the legitimacy of their voices. There are multiple ways in which they are 'othered' and 'violated.' I focus on the cultural production of Muslim women to demonstrate that literary and artistic expressions offer significant sites for studying the cultural production of stereotypes.

My work further demonstrates how the inclusion of non-literal forms enriches feminist epistemology about the conditions of marginality and recovers the agency of silent participants.

The unchallenged importance given to the speech act in the public sphere undermines non-verbal expressions of the underprivileged. At the same time, one must note that hegemony often operates through signs and symbolic expressions in the public sphere, where many dominant meanings are asserted and communicated without naming them. The domination of such hegemonic discourses can only be pierced through an alternative transcoding of meanings. These alternative articulations are communicated through intimacy, intersectional alliances, and visual practices in the public domain.

शोध प्रबंध का सार

स्पेक्ट्रल से हाइपरविजिबल तक: भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं का सांस्कृतिक उत्पादन, 1992-2024

शोध प्रबंध 1990 के दशक से लेकर वर्तमान तक सार्वजनिक क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी का पता लगाता है और गैर-मुखर प्रतिभागियों से लेकर अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त करने और एजेंसी का दावा करने तक के उनके संक्रमण की जांच करता है। यह कार्य दिखाता है कि मुस्लिम महिलाएँ सार्वजनिक क्षेत्र में बोलने के अपने अधिकार का दावा कैसे कर रही हैं और अपनी एजेंटिक संप्रभुता को पुनः प्राप्त कर रही हैं। उनके दावों के साथ अभिव्यक्ति और अभिव्यक्ति के नए रूप हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र में प्रतिरोध की एक नई भाषा में योगदान करते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं द्वारा अर्जित यह नया आत्मविश्वास हाशिए पर होने की रूढ़िबद्ध समझ के लिए एक चुनौती पेश करता है और यह दर्शाता है कि उनकी चिंताएँ और आकांक्षाएँ प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं की ऐतिहासिक रूप से मानी जाने वाली चिंताओं से बहुत अलग हैं। बोलने की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियाँ उनकी हाशिए की स्थिति को इंगित करती हैं। मुस्लिम महिलाओं के भाषण/कार्य को नियंत्रित करने वाले नियामक तंत्रों में विवादास्पद हिंसा, विकल्पों से इनकार, सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता तक सशर्त पहुँच और बहिष्कार की राजनीति को बढ़ावा देना शामिल है। पूर्वाग्रह, पक्षपात और रूढ़िवादिता सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से बनाई और पुनरुत्पादित की जाती है, ताकि उनकी आवाज़ की वैधता को कमज़ोर किया जा सके। मैं मुस्लिम महिलाओं के सांस्कृतिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करती हूँ ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि साहित्यिक और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ महत्वपूर्ण स्थल प्रदान करती हैं जहाँ रूढ़िवादिता के सांस्कृतिक उत्पादन का अध्ययन किया जा सकता है। मेरा काम आगे यह दर्शाता है कि कैसे गैर-शाब्दिक रूपों का समावेश हाशिए की स्थितियों के बारे में नारीवादी ज्ञानमीमांसा को समृद्ध करता है और मूक प्रतिभागियों की एजेंसी को पुनः प्राप्त करता है। सार्वजनिक क्षेत्र में भाषण अधिनियम को दिया जाने वाला निर्विवाद महत्व वंचितों की गैर-मौखिक अभिव्यक्तियों को कमज़ोर करता है। साथ ही, किसी को यह ध्यान रखना चाहिए कि सार्वजनिक क्षेत्र में अक्सर आधिपत्य संकेतों और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संचालित होता है, जहाँ कई प्रमुख अर्थों को नाम दिए बिना ही मुखर और संप्रेषित किया जाता है। ऐसे आधिपत्यपूर्ण प्रवचनों के वर्चस्व को केवल अर्थों के वैकल्पिक ट्रांसकोडिंग के माध्यम से ही भेदा जा सकता है। इन वैकल्पिक अभिव्यक्तियों को अंतरंगता, अंतर-संबंधी गठबंधनों और सार्वजनिक क्षेत्र में दृश्य प्रथाओं के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।